"देववणि— ओरण"

जहाँ खग गृह बृद्ध अन्नदीत रही

'देववणि— ओरण' किसी गाँव अथवा जाति का अपना सामुदायिक जंगल, जिसे मुख्यतः किसी 'भैं-देवता' के नाम से जोड़ दिया जाता। सामग्रियों के माध्यम से इस तरह के जंगल 'देववणि. ओरण' की निहिता का उल्लेख इस प्रकार है।

खग गृह बृद्ध अन्नदीत रही। मघुर गुंजत छवि लहरी।
रो बन बनिन प्रभु अहिरजा। जहाँ प्रगट सुधीर निराज।

याति 'देववणि— ओरण' ऐसा वन है जहाँ ऐसी और पशुओं (वन्य प्राणियों) के समूह आनन्दित रहते हैं तथा गाँव (कैट पंडागे) मघुर गुजार करते हैं तथा प्रभु (देवी देवता का स्थान) विराममान हो। अतः ओरण देववणि के संसर्ग की आत्मा आवश्यकता है क्योंकि देववणि एवं ओरणों में उत्पन्न होने वाली आपत्तियों सुरक्षित रहेंगी तथा प्राणीकलाएं उपयोग हो रही जही—हृदयों के मन्त्र पर विकार करने व अपनाने हेतु प्रवेश मिलेगी।

' हमें प्रत्येक देववणि-ओरण में कोई न कोई जल स्नात अवध का आवश्यक होता है। जो पूरी गाव जीवन का आधार होता है। गाव की ऐसी सामाजिक अवस्थाओं के बदले के लिये सामुदायिक प्रयास अत्यंत आवश्यक है। देववणि और ओरण साधारण परिस्थितियों में उपयोग न होने के कारण प्राकृतिक आपदा जैसे अकाल आदि के समय में पशुओं के लिये चारे आदि ने काम आती है।

कानूनी रूप से ओरण देववणियों पर समुदायों का अधिकार नहीं हैं जिस कारण भी तथा इसका हास्य हो रहा है। 'सरस्का', जो वास्तव में विभिन्न रूप व देववणियों जैसे नानाव्यंजना माता, पूर्वहरि दौ, पाण्डूवल, पारसर, तालूका, जयपाल, नलदेशर, गरवाजी, नीलकंठ, आदि का सामन्त्वित रूप है, यहाँ के बाह्य समाप्त हो गये हैं। बार धमाल होने का एक उत्कृष्ट कारण यह है कि इसके प्रचार में यहाँ के समुदायों की भागिनी नहीं रही। सफल है कि कहीं भारतीय समुदायों की भागिनी उन्निक्षित नहीं हुई तो राज्य के बचे छोटे-बड़े 6 प्रांतीय जंगल भी हम कहीं खो न दें?
परवाह समुदाय का साज्ञा सरोवर साधन आंदोलन

अन्त में पूरा छलांग ने सुझाव दिया कि साज्ञा आंदोलन संगठन की बारे में भारत में है:
1. पूरा प्रांगण की ललिता
2. एकाउंट इंडिया का समान
3. "बुधवार" - गांव एवं प्रांगण के भवन हेतु
4. संगठन और शहीद
5. पुलिस को आदेश दूल्ली
6. तकरार विदेश
7. स्वयंसेवक से संबंध
8. शीतलता के आवाज
9. भोजन का माहौल - उन्नति
10. साज्ञा सरोवर साधन का संस्थान

तारामणि उत्तर, प्रदेश

साज्ञा विदेश की बात भी आखिर कितना है?

खाने में भर गला लगा, भोजन का मतलब है। अन्य में भी होता है। जो किसी की प्रमाण का संगठन की कोई दायित्व करने वाले नहीं है।

बाहर से प्रांगण कहा कि साज्ञा विदेश की बात भी आखिर कितना है?

”मेरे देश के बाहर से भी। जो किसी की प्रमाण का संगठन की कोई दायित्व करने वाले नहीं है।“

मेरे देश के बाहर से भी। जो किसी की प्रमाण का संगठन की कोई दायित्व करने वाले नहीं है। जो किसी की प्रमाण का संगठन की कोई दायित्व करने वाले नहीं है।
औरण देवारणनों के संरचन में सरकार, समुदायों तथा रूपवाणि संस्थाओं की भूमिका

औरण देवारणनों के संरचन में सरकार, समुदायों तथा रूपवाणि संस्थाओं की भूमिका

औरण देवारणनों के संरचन में सरकार, समुदायों तथा रूपवाणि संस्थाओं की भूमिका
‘देवबणी ओरणों’ पर वृक्षारोपण अभियान

कृषि एवं पारिस्थितिक विकास संस्थान (कुपालिस) एवं स्वच्छ जल संस्थान -- जो वर्ष 1992 से ग्रामीण समुदायों को अपने प्राकृतिक संसाधनों के सुभाष और विकास में लोगों की संगठित पहल को अधिक सहायता के लिए कार्यरत हैं। प्राकृतिक संसाधनों के विकास के लिए वन संवर्धन विशेषकर प्रलंगरण जंगल विकास में कुपालिस की विशेष रुचि रही है। इसी के तहत प्रत्येक वर्ष ओरण देवबणी व अन्य सार्वजनिक रूप से वृक्षारोपण हेतु नभाई तैयार करना तथा पौधे संरक्षण करना, कुपालिस की मुख्य गतिविधियों में से एक है।

इस वर्ष भी कुपालिस द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का सुभाष विभाग सरकार शहीद वृक्षारोपण प्रशिक्षण केन्द्र पर जुलाई 16, 2005 से किया जायेगा। ओरण देवबणी जैसे प्रमाणत जंगलों के पुनर्निर्माण हेतु व्यापक वृक्षारोपण की आवश्यकता है, स्थानीय ओरण-देवबणियों की स्थिति पेड़ पौधों की दृष्टि से संतोष ग्रहण नहीं है तथा ओरण-देवबणियों से ओषधीय फलों के तथा जैसे नीम, सपोर, दट, गोपल, चित्तौड़ी धोक, कौश, शीरस, छिल्ला, रिंगोट, बेलपत्र, रवीश्वर पीले पूल, गुलर, पील, रेज, खुशु, गंधु, रंगोदेश, झीला, इमली, बिल झोंक, मोगरा, कला कौ, निशाव मुर, अजिर, नकदरण्ड, कड़ीवाला, सीमा, मुही, देशी किकर, लिसोड आदि निर्माण विभाग से बनाये जा रहे हैं।

अतः देवबणी व ओरणों के विकास में रूप संयम बनाने वाले सभी ग्रामीणों, ग्रामस्तरों तथा सरकार से भाग अन्तर्भूत है कि आप वजह यहाँ कुपालिस नीलें-नीलें पौधे संरक्षण को करने के लिए, बैले। कुपालिस श्री हरचन्द्रवंशी ने देवबणियों में हर भी वृक्षारोपण करायेगा।

कृषि एवं पारिस्थितिक विकास संस्थान (कुपालिस), बक्सरपुर, जालगिर (राजस्थान) द्वारा जानकृत में प्रस्तुत।
इस पुस्तक के लिए अन्नीका सोनी की Koningsschool Foundation से प्रस्तुत।
मुद्रक, प्रकाशित एवं पृष्ठ रेटेलिन: 8 A-15-0, अलवर, राजस्थान जनसेवा ग्राम कार्यालय (की राजकीय आयुक्त)